समराइच्च कहा में वर्णित वैराग्य भावनाएँ

डॉ. सुनील कुमार सिंह

संसारिक वस्तुओं और व्यक्तियों के असलियत को न समझने के कारण जीव उसके मोह में पड़ जाता है और उनमें आसक्त हो जाता है। उसकी यह आसवित ही उसके बन्धन का मुल कारण है। जब जीव में संसार के प्रति अनासवित या वैराग्य की भावना उत्पन्न नहीं होती, तब तक संसार से उसका छुटकारा पाना सम्भव नहीं है, इसलिए जैनधर्म में संसार की वास्तविकता को समझकर उसका बार–बार स्मरण और चिन्तन करते रहने का उपदेश दिया गया है। इस प्रकार के स्मरण और चिन्तन से जीव में संसार के प्रति अनासवित औन वैराग्य की भावना विकसित होती है। और समत्व–भाव उत्पन्न होता है। यह भावना मोक्ष प्राप्ति के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। संसार और इसके पदार्थों की असलियत के बारे में चिन्तन करने को ही जैनधर्म में अनुप्रेक्षा कहा गया है अर्थात गहराई से विचार करना।